ISSN:2583-8849



टीकम चन्दर ढोडरिया
बाराँ, राजस्थान

सारे दिन की वेदना, दु:ख कलेश थकान।
हर लेती है साँझ को, बिटिया की मुस्कान।।

कितना भोला है भला, बिटिया का विश्वास।
पीहर में वह आज भी, बचपन रही तलाश।।

नयन भरे हैं नीर-से, उमगी गहरी पीर।
बिटिया तेरी याद ने, दिया कलेजा चीर।।

गणित दुई की एक-सी, पीहर या ससुराल।
बिटिया हल करती रही, दोनों जगह सवाल।।

बाहर की हो काष्ठता, या भीतर का मोम।
कर देते परिवार पर, बाबूजी सब होम।।

काँकड़ से पहुँची नजर, ज्यों ही मेरे गाँव।
अगवानी को आ गई, यादें नंगे पाँव।।

लहरों पर क्या लिख दिया, गोरी तेरा नाम।
घाट-घाट करती फिरी, हमें नदी बदनाम।।

नदिया से कोमल सखे , हैं किसके जज़्बात।
कँकड़िया इक क्या गिरी,लगा काँपने गात।।

हँसी-हँसी में यूँ कभी, लिया रात ने चूम।
लिए निशानी आज भी, चाँद रहा है घूम।

आएँ हैं अफ़सर नए, फैली वन में बात।
डर से पीले पड़ गए , वृक्षों के सब पात।।

साथ गई ना श्याम के, नहीं करी मनुहार।
आँखों में भर पी गई, राधा सारा प्यार।।

पानी तो ओझल हुआ, सिसक रही है रेत।
नदिया कहती हे मनुज, चेत सके तो चेत।।

वही कफन-सी भूख है,वही पूस की रात।
वैसे ही हैं आज भी, होरी के हालात।।

इंदुमती के शोक में, अज था बहुत उदास।
बहे अश्रु रघुवंश में, किसके कालीदास।।

अश्रु-सिक्त संवेदना,गहन मिलन की प्यास।
विरह-दग्ध वह यक्ष था,या तुम कालीदास।।